



Commemoration of
Centenary Birth Celebration of
Pt. Deendayal Upadhyay Ji
at
Indian Institute of Information Technology Kota (IIIT Kota)

- As per directive received on date 28/08/2017 to IIIT Kota from Joint Secretary, Higher Education, Government of Rajasthan through letter no. प. 3 (1) शिक्षा-4/2012 पार्ट , dated 23/08/2017, Dr. Parikshit Singh and Dr. Smita Naval, both Assistant Professor at IIIT Kota, organized following activities to commemorate centenary birth celebration of Pt. Deendayal Upadhyay Ji:

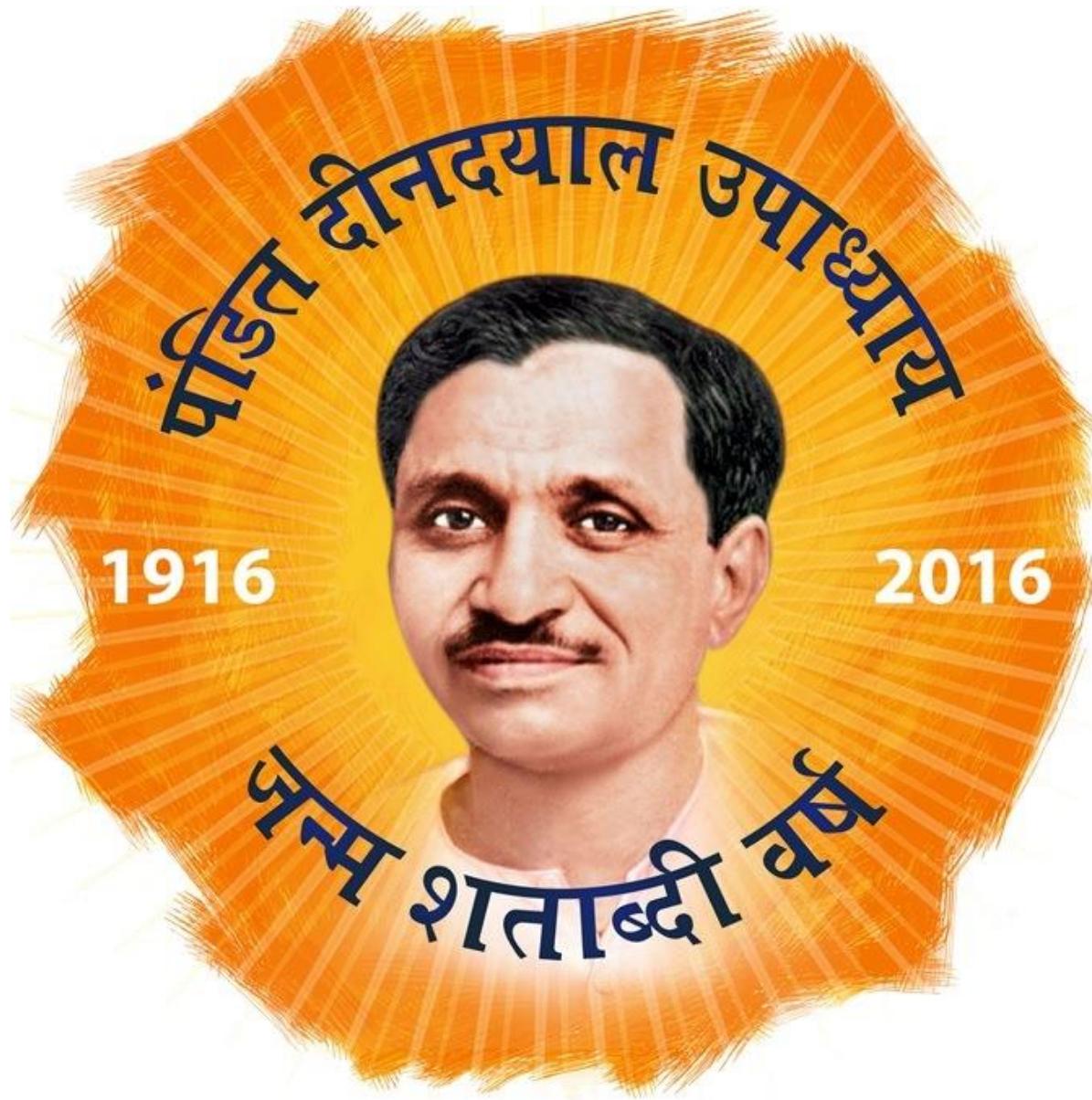
- September 12-17, 2017

- Poster competition on topics “Integral Humanism” or “एकात्म मानववाद” along with description of the larger message that participant is trying to convey.
- Essay competition on topics “Importance of Integral Humanism for New India Resolution” or “न्यू इंडिया संकल्प सिद्धि के लिए एकात्म मानववाद का महत्व”.

- September 18, 2017

- Rangoli making for the event.
- Welcome of Prof. Udaykumar R Yaragatti (Mentor Director and Chief Guest of the event), Dr. Vijay Laxmi (Coordinator), faculty members, staff members and students.
- Documentary titled “एकात्म मानववाद एवं अंत्योदय के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जीवन गाथा” presentation at 5:30 PM.
- Quotes of Pt. Deendayal Upadhyay Ji at 5:45 PM.
- Presentation of best posters and essays by concerned students at 6:00 PM.
- Mentor Director remarks titled “Role of Youth to Full-fill Integral Humanism for New India Resolution” at 6:15 PM.
- Best posters and essays prizes by Mentor Director and Coordinator at 7:15 PM.
- Vote of thanks by Dr. Parikshit Singh at 7:25 PM.
- Refreshments for guests and participants at 7:30 PM.

Event Photographs



Logo for the event



Rangoli for the event



**Welcome of Prof. Udaykumar R Yaragatti (Mentor Director and Chief Guest of the event)
by Dr. Vijay Laxmi (Coordinator)**



**Prof. Udaykumar R Yaragatti (Mentor Director and Chief Guest of the event),
Dr. Vijay Laxmi (Coordinator), faculty members, staff members and students**



Faculty members, staff members and students



Prof. Udaykumar R Yaragatti (Mentor Director and Chief Guest of the event) delivering talk on “Role of Youth to Full-fil Integral Humanism for New India Resolution”



Prof. Udaykumar R Yaragatti (Mentor Director and Chief Guest of the event) delivering talk on “Role of Youth to Full-fill Integral Humanism for New India Resolution”



Prof. Udaykumar R Yaragatti (Mentor Director and Chief Guest of the event) delivering talk on “Role of Youth to Full-fill Integral Humanism for New India Resolution”



Prof. Udaykumar R Yaragatti (Mentor Director and Chief Guest of the event) delivering talk on “Role of Youth to Full-fill Integral Humanism for New India Resolution”



Prof. Udaykumar R Yaragatti (Mentor Director and Chief Guest of the event) and Dr. Vijay Laxmi (Coordinator) felicitating Manmohan Kumar (2016KUEC2017), winner of 1st Prize in Essay Competition



Prof. Udaykumar R Yaragatti (Mentor Director and Chief Guest of the event) and Dr. Vijay Laxmi (Coordinator) felicitating Vipasha Chandwani (2016KUCP1011), winner of 2nd Prize in Essay Competition



Prof. Udaykumar R Yaragatti (Mentor Director and Chief Guest of the event) and Dr. Vijay Laxmi (Coordinator) felicitating Aman Anand (2016KUEC2022), winner of 1st Prize in Poster Competition



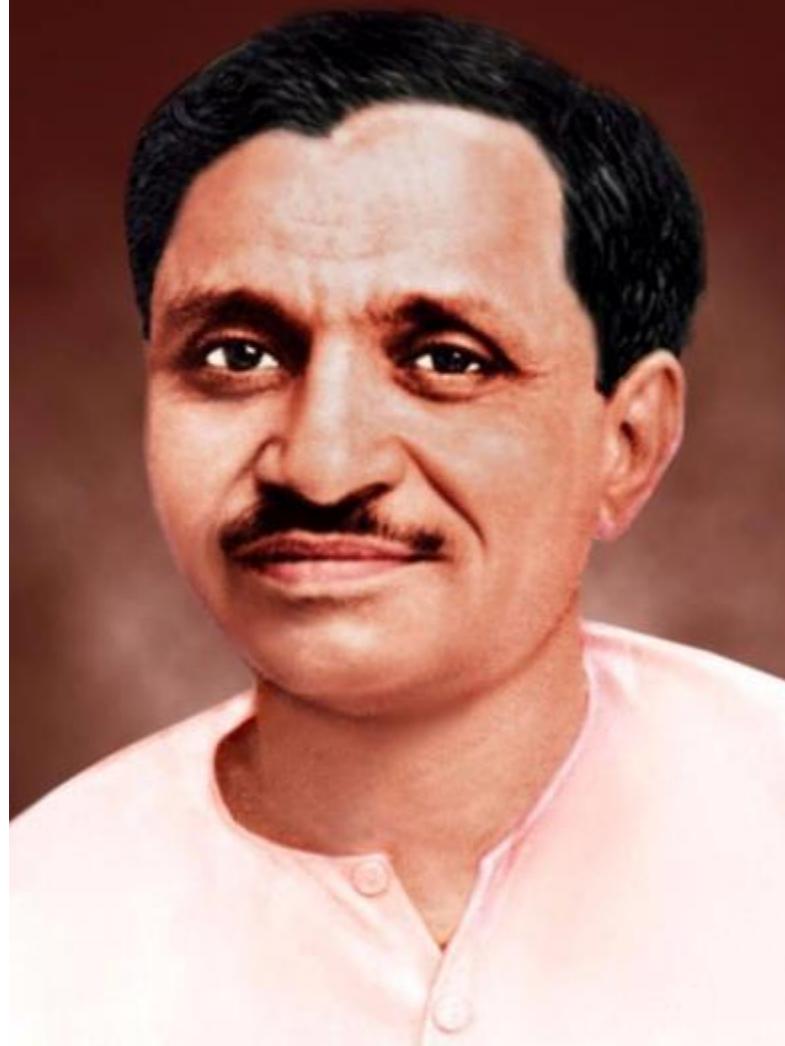
Prof. Udaykumar R Yaragatti (Mentor Director and Chief Guest of the event) and Dr. Vijay Laxmi (Coordinator) felicitating Rajeev Bharti (2017KUEC2005), winner of 2nd Prize in Poster Competition

Quotes of Pt. Deendayal Upadhyay Ji

दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी

“शक्ति हमारे असंयत व्यवहार में नहीं,
बल्कि संयत कारवाई में निहित है”

दीनदयाल उपाध्याय
25 सितंबर 1916–11 फरवरी 1968





“

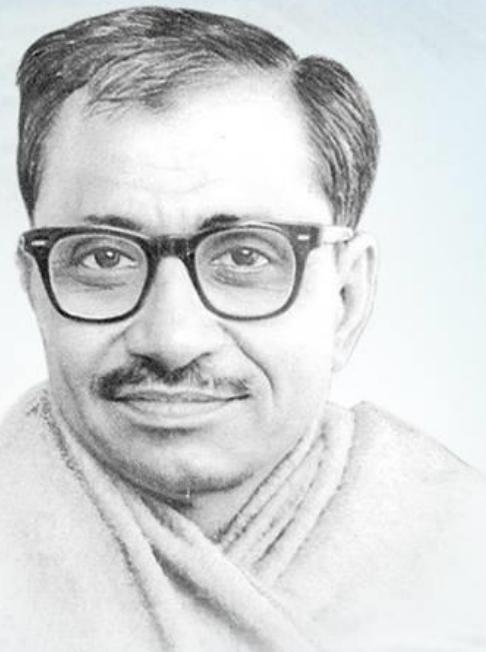
अर्थ और धर्म एक दुसरे के विपरीत होते हुए भी
एक दुसरे का आधार हैं।

”

पडित दीनदयाल उपाध्याय

(25 सितम्बर 1916 – 11 फरवरी 1968)

पडित दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी



“

ये जल्दी है कि हम ‘हमारी राष्ट्रीय पहचान’ के बारे में
सोचें जिसके बिना ‘स्वतंत्रता’ का कोई अर्थ नहीं है।

”

दीनदयाल उपाध्याय

(25 सितम्बर 1916 – 11 फरवरी 1968)

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी वर्ष



“

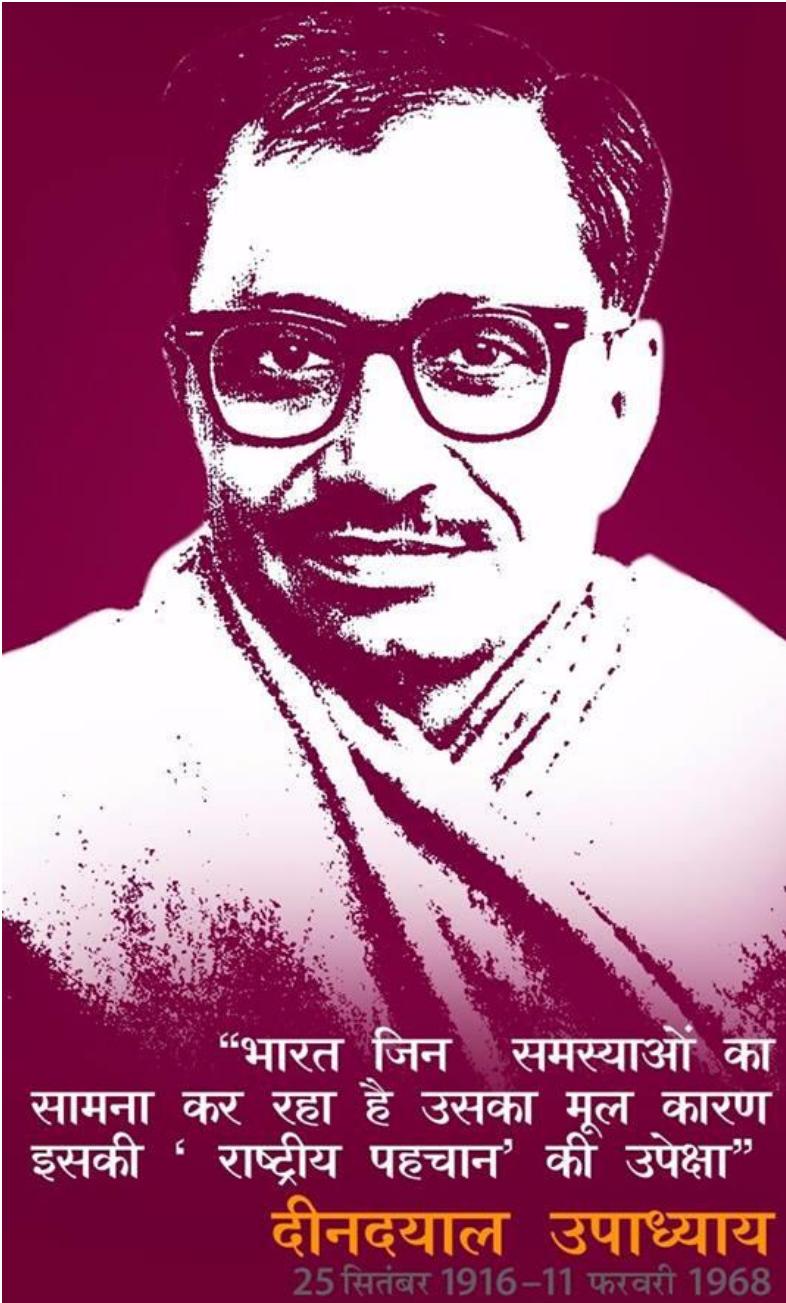
समर्थ दुर्बल को समाप्त ना करे, इसलिए हम
नियम व् समाज बनाते हैं।

”

पंडित दीनदयाल उपाध्याय

(25 सितम्बर 1916 – 11 फरवरी 1968)

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी



“भारत जिन समस्याओं का
सामना कर रहा है उसका मूल कारण
इसकी ‘राष्ट्रीय पहचान’ की उपेक्षा”

दीनदयाल उपाध्याय

25 सितंबर 1916 – 11 फरवरी 1968

दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी



“

मानव को पेट और हाथ दोनों मिले हैं। यदि हाथों को काम
ना मिले और पेट को खाना मिलता रहे तो मनुष्य सुखी
नहीं रहेगा, उसका विकास नहीं होगा।

”

दीनदयाल उपाध्याय

(25 सितम्बर 1916 – 11 फरवरी 1968)

पडित दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी वर्ष



“

विश्वभर में मनुष्यों के शरीर के अंगों की क्रिया समान होते हुए भी जो औषधि इंग्लैंड में कारगर होती है, वह भारत में भी उपयोगी सिद्ध होगी यह निर्विवाद नहीं कहा जा सकता।

”

दीनदयाल उपाध्याय

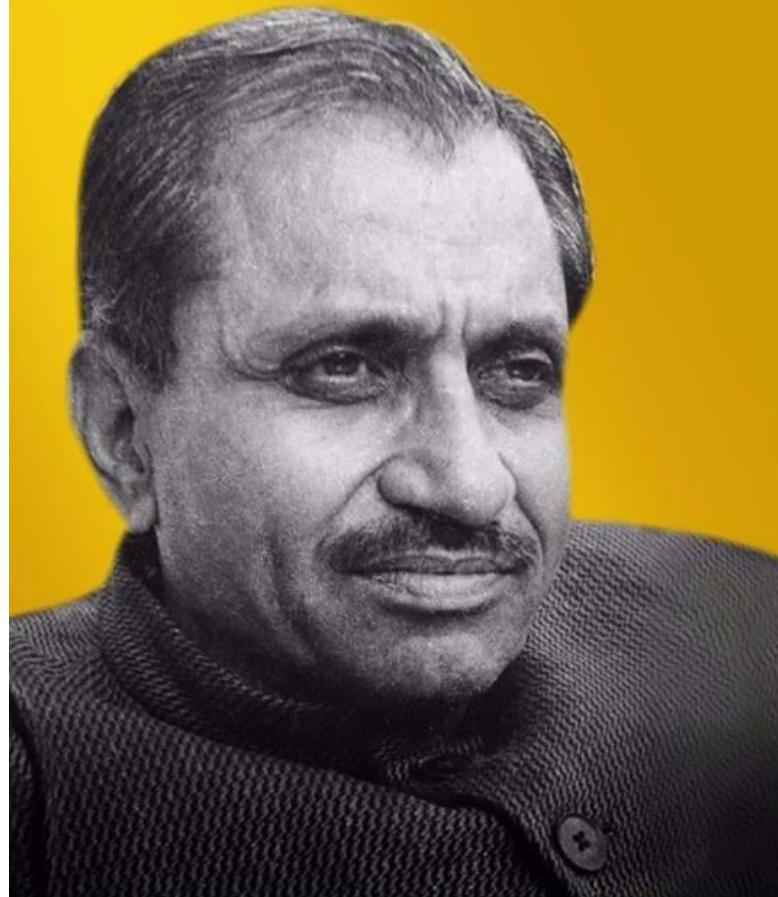
(25 सितम्बर 1916 – 11 फरवरी 1968)

पडित दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी

अनेकता में एकता और विभिन्न
रूपों में एकता की अभिव्यक्ति
भारतीय संस्कृति की सोच रही है

दीनदयाल उपाध्याय

25 सितंबर 1916 - 11 फरवरी 1968



दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी



“

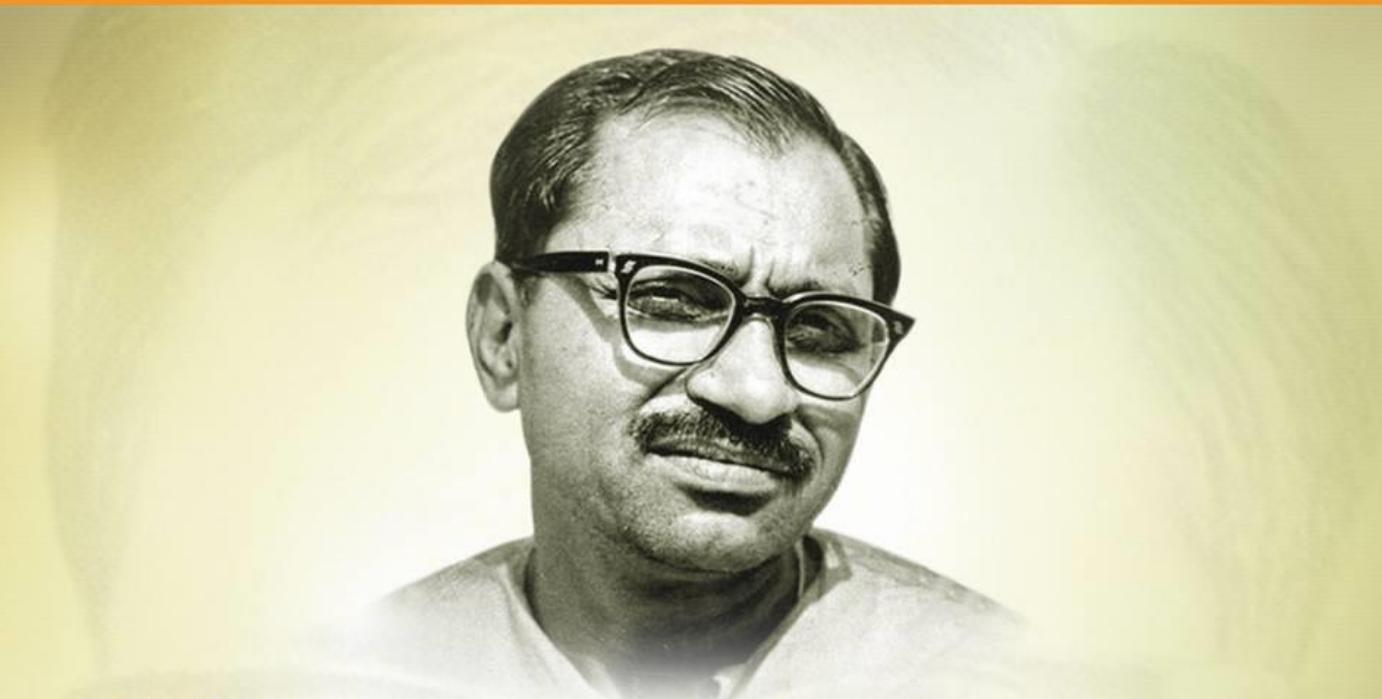
जिस व्यवस्था में आर्थिक क्षमता तो बढ़े, किन्तु मानवता
के अन्य अंगों के विकास की शक्ति कुठित हो जाय, वह
कल्याणकारी नहीं हो सकती। मानव ही हमारी व्यवस्था
का केंद्र होना चाहिए।

”

पडित दीनदयाल उपाध्याय

(25 सितम्बर 1916 – 11 फरवरी 1968)

पडित दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी

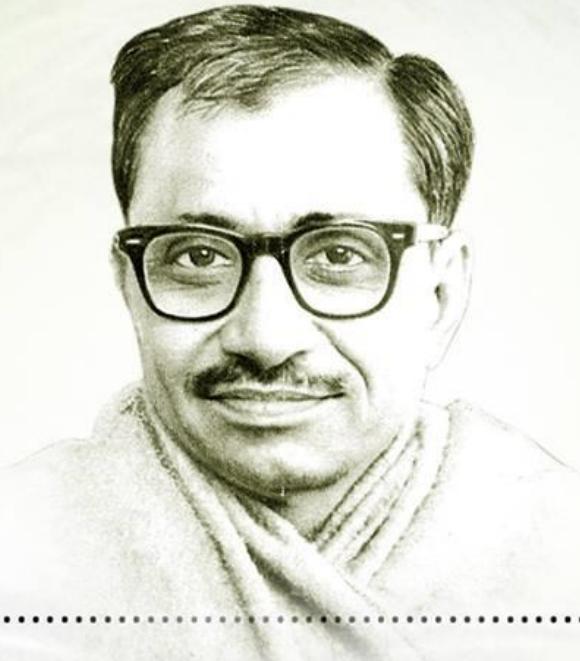


“
जिस प्रकार शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के समुच्चय से व्यक्ति
बनता है, उसी प्रकार देश, संकल्प, धर्म और आदर्श के
समुच्चय से राष्ट्र बनता है।”
”

पंडित दीनदयाल उपाध्याय

(25 सितम्बर 1916 – 11 फरवरी 1968)

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी



“

प्रजातंत्र की व्याख्या में जनता का शासन ही पर्याप्त नहीं, यह शासन जनता के हित में भी होना चाहिए। जनता के हित का निर्णय तो धर्म ही कर सकता है, अतः जनराज्य को धर्मराज्य भी होना आवश्यक है। सच्चा प्रजातंत्र वही हो सकता है, जहां स्वतंत्रता और धर्म दोनों हों। धर्मराज्य में इन सभी कल्पनाओं का समावेश है।

”

पंडित दीनदयाल उपाध्याय

(25 सितम्बर 1916 – 11 फरवरी 1968)

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी वर्ष

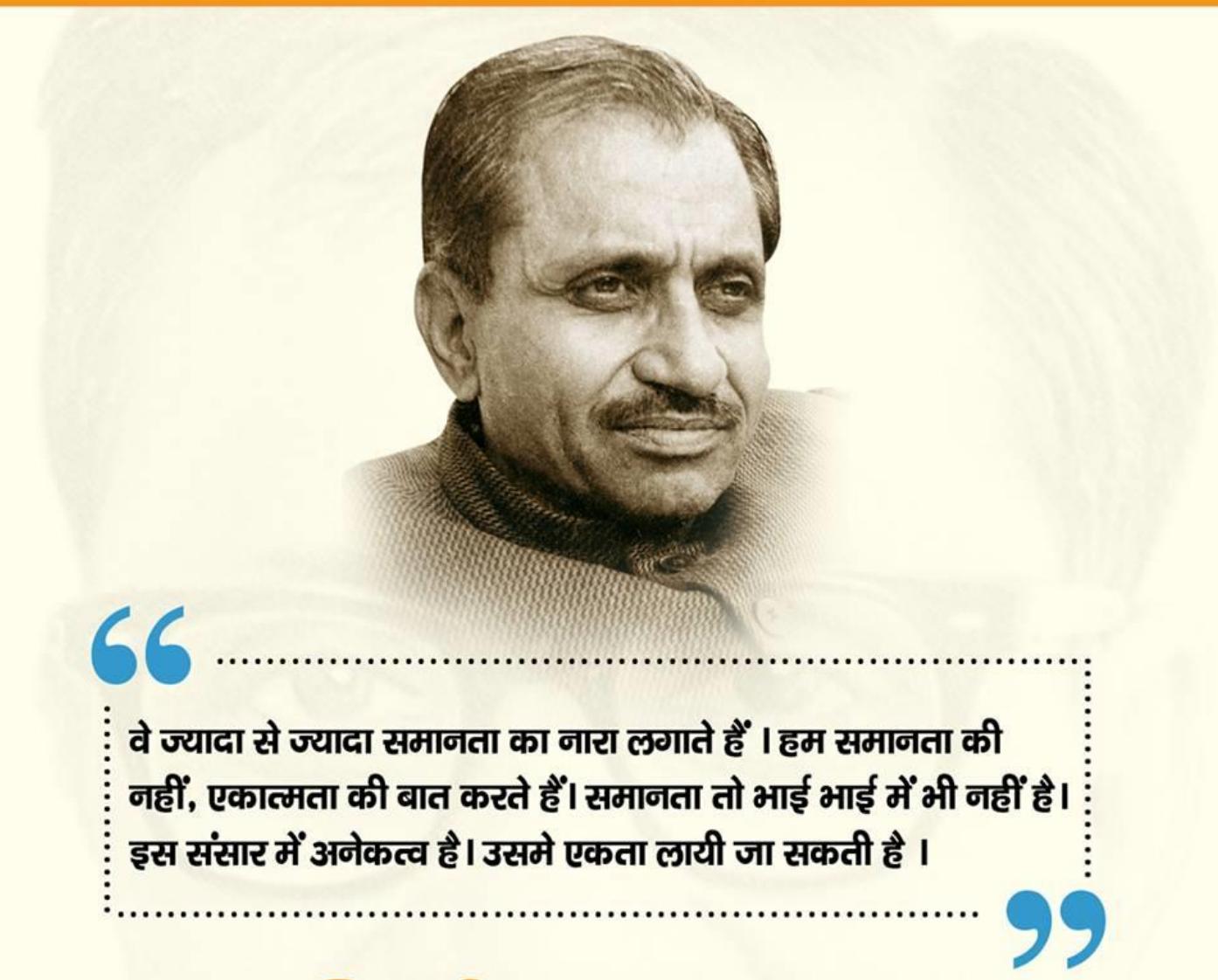


“आर्थिक योजनाओं तथा आर्थिक प्रगति का माप समाज के उपर की सीढ़ी पर पहुँचे हुए व्यक्ति नहीं, बल्कि सबसे नीचे के स्तर पर विद्यमान व्यक्ति से होगा”

दीनदयाल उपाध्याय

25 सितंबर 1916 – 11 फरवरी 1968

दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी



“

वे ज्यादा से ज्यादा समानता का नारा लगाते हैं। हम समानता की नहीं, एकात्मता की बात करते हैं। समानता तो भाई भाई में भी नहीं है। इस संसार में अनेकत्व है। उसमें एकता लायी जा सकती है।

”

पंडित दीनदयाल उपाध्याय

(25 सितम्बर 1916 – 11 फरवरी 1968)

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी



“

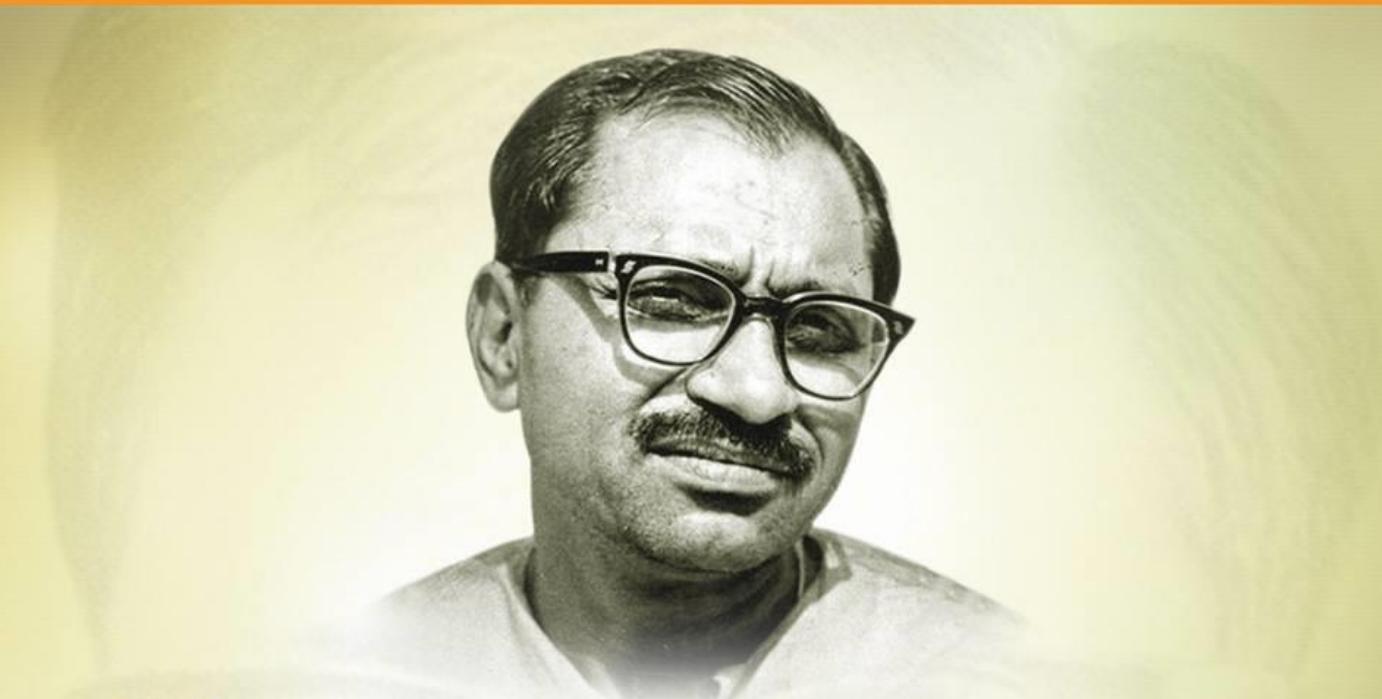
जीवन का, समाज का आधार संघर्ष नहीं, सहयोग है। प्रकृति भी सहयोग के आधार पर चलती है। वनस्पति और मनुष्य प्राणिमात्र एक दुसरे के पूरक बने हैं। दोनों में संघर्ष नहीं। हमें आक्सीजन की आवश्यकता है, वृक्षों को कार्बन डाइऑक्साइड की आवश्यकता है। इस प्रकार वनस्पति और मनुष्य एक दुसरे के पूरक हैं।

”

पंडित दीनदयाल उपाध्याय

(25 सितम्बर 1916 – 11 फरवरी 1968)

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी



“
देश भूमि और जन-दोनों को मिलाकर बनता है। केवल भूमि ही देश नहीं। किसी भूमि पर एक जन (समाज) रहता हो और वह उस भूमि को माग्र के रूप में पूज्य समझे, तभी वह देश कहलाता है।”

पंडित दीनदयाल उपाध्याय

(25 सितम्बर 1916 – 11 फरवरी 1968)

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी

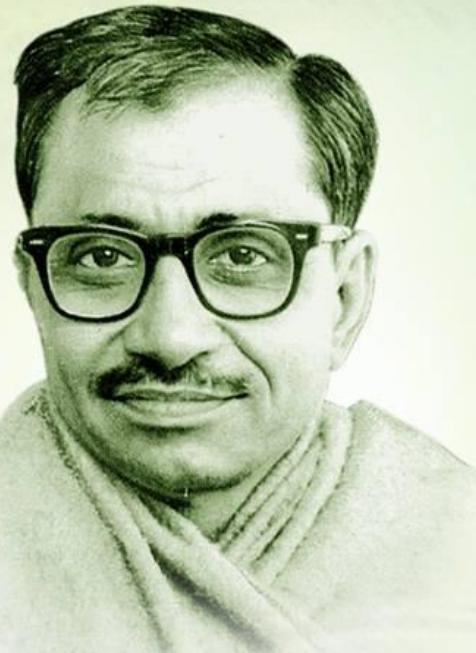


मानव प्रकृति में दोनों प्रवृत्तियां रही हैं-
एक तरफ क्रोध और लोभ तो
दूसरी तरफ प्रेम और त्याग

दीनदयाल उपाध्याय

25 सितंबर 1916 – 11 फरवरी 1968

दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी



“

यदि यन्त्र मानव का स्थान लेकर उसे भूखा मारे तो वह उन उद्देश्यों के विपरीत होगा, जिनकी सिद्धि के लिए यन्त्र का आविष्कार हुआ। जड़ मरीन इसकी दोषी नहीं है। यह बुराई उस अर्थव्यवस्था की है, जिसमें विवेक लुप्त हो जाता है।

”

दीनदयाल उपाध्याय

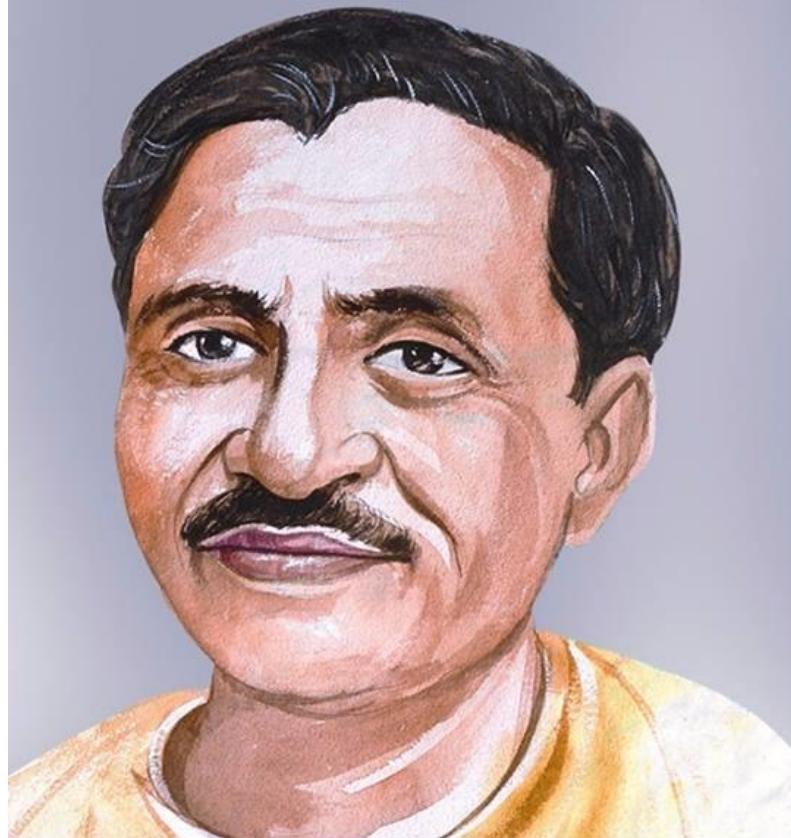
(25 सितम्बर 1916 – 11 फरवरी 1968)

पटित दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी वर्ष

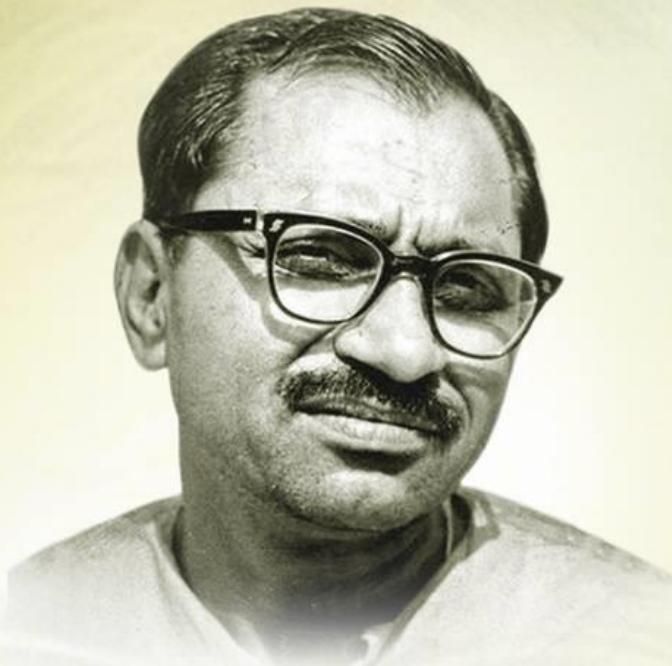
हम लोगों ने अंग्रेजी वस्तुओं का विरोध करने
में तब गर्व महसूस किया था जब वे (अंग्रेज)
हम पर शासन करते थे, पर हैरत की बात है,
अब जब अंग्रेज जा चूके हैं, पश्चिमीकरण
प्रगति का पर्याय बन चुका है

दीनदयाल उपाध्याय

25 सितंबर 1916 – 11 फरवरी 1968



दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी



“

मर्यादाओं के अंतर्गत किया का नाम संयम है। भूखा मरना संयम नहीं, अपितु शरीर की आवश्यकता के अनुरूप गुण और मात्र में भोजन करना संयम है। बिलकुल ना बोलना, यहाँ तक की अत्याचारों के विलम्ब आवाज भी ना उठाना अथवा किसी को सत्परामर्श भी ना देना, संयम नहीं। वाचाल और गूँणों के बीच संयमी पुरुष आता है, जो आवश्यकता पढ़ने पर बोलता है और अवश्य बोलता है।

”

दीनदयाल उपाध्याय

(25 सितम्बर 1916 – 11 फरवरी 1968)

पडित दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी



मानवीय ज्ञान
आम संपत्ति है

— दीनदयाल उपाध्याय

25 सितंबर 1916–11 फरवरी 1968

दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी



“

आवश्यकता है कि अपने 'स्व' का विचार किया जाय। बिना उसके स्वराज्य का कोई अर्थ नहीं। स्वतंत्रता हमारे विकास और सुख का साधन नहीं बन सकती। जब तक हमें अपनी वास्तविकता का पता नहीं, तब तक हमें अपनी शक्तियों का ज्ञान नहीं हो सकता और न उसका विकास संभव है।

”

दीनदयाल उपाध्याय

(25 सितम्बर 1916 – 11 फरवरी 1968)

पडित दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी



“

यहां भारत में, हमने अपने समक्ष मानव के समग्र विकास के लिए शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा की आवश्यकताओं की पूर्ती करने की चार -स्तरीय जिम्मेदारियों का आदर्श रखा है।

”

दीनदयाल उपाध्याय

(25 सितम्बर 1916 – 11 फरवरी 1968)

पडित दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी वर्ष



“

हमारा ध्येय संस्कृति का संरक्षण मात्र नहीं, अपिनु
उसे गति देकर सजीव व सक्षम बनाना है। उसके
आधार पर राष्ट्र की धारणा हो और हमारा समाज
स्वस्थ एवं विकासोन्मुख जीवन व्यतीत कर सके,
इसकी व्यवस्था करनी है।

”

पंडित दीनदयाल उपाध्याय

(25 सितम्बर 1916 – 11 फरवरी 1968)

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी वर्ष

दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी

“चरैवेति चरैवेति चरैवेति”

ना थको, ना रुको, ना झुको... बस चलते ही रहो...

- दीनदयाल उपाध्याय

25 सितंबर 1916 – 11 फरवरी 1968



Poster Competition

- During September 12-17, 2017, IIIT Kota organized Poster competition on topics “Integral Humanism” or “एकात्म मानववाद” along with description of the larger message that participant is trying to convey.
- Best two posters were chosen by following IIIT Kota faculty members: Dr. Smita Naval, Dr. Tapan Jain, Dr. Amit Kumar, Dr. Sangeeta Singh, Mr. Rajendra Solanki.
- Individual faculty member gave marks to each poster on scale of minimum 1 to maximum 10. Overall marks obtained by each participant is average of marks awarded by individual faculty member. Top two point earners were adjudged as best 1st and 2nd posters.
- List of participants and average marks obtained by them in poster competition were as follows:
 - ✓ Jayansh Goyal (2017KUCP1042) – 4.60
 - ✓ Naresh (2017KUCP1034) – 4.20
 - ✓ Vibhor Rawal (2017KUCP1009) – 4.20
 - ✓ Manomohan Kumar (2016KUEC2017) – 5.10
 - ✓ Manva Mahammed Tokir Abdul Majid (2017KUCP1019) – 4.80
 - ✓ Rajeev Bharti (2017KUEC2005) – 5.70
 - ✓ Sanjeev Kumar (2017KUEC2010) – 4.60
 - ✓ Aman Anand (2016KUEC2022) – 6.00
 - ✓ Rohan Chouhan (2016KUEC2004) – 3.00
 - ✓ Aashish Uniyal (2017KUCP1011) – 5.00
 - ✓ Krishna Sharma (2017KUCP1005) – 4.20
 - ✓ Dipesh Kumar Rathi (2017KUCP1012) – 4.90
 - ✓ Madhur Sharma (2017KUCP1001) – 5.60

INTEGRAL HUMANISM

एकात्म मानववाद

"Human nature has both the tendencies :

anger & greed on the one hand and love & sacrifice on the other."

"It is essential that we think about our national identity, without which Independence has no meaning."



1st Prize:

Aman Anand (2016KUEC2022)

- पंडित दीनदयाल उपाध्याय

INTEGRAL HUMANISM : TO HUMAN BY THE HUMAN FOR THE HUMAN



2nd Prize:

Rajeev Bharti (2017KUEC2005)

Essay Competition

- During September 12-17, 2017, IIIT Kota organized Essay competition on topics “Importance of Integral Humanism for New India Resolution” or “न्यू इंडिया संकल्प सिद्धि के लिए एकात्म मानववाद का महत्व”.
- Best two essays were chosen by following IIIT Kota faculty members: Dr. Parikshit Singh, Dr. Vinita Tiwari, Dr. Kalpana Naidu, Dr. Neeraj Rao, Dr. Hemant Sharma, Dr. Pooja Jain.
- Individual faculty member gave marks to each essay on scale of minimum 1 to maximum 10. Overall marks obtained by each participant is average of marks awarded by individual faculty member. Top two point earners were adjudged as best 1st and 2nd essays.
- List of participants and average marks obtained by them in essay competition were as follows:
 - ✓ Shivam Gurjar (2017KUCP1015) – 3.17
 - ✓ Mohit Kashyap (2017KUCP1029) – 3.75
 - ✓ Aman Kumar (2017KUCP1008) – 4.67
 - ✓ Sayyad Oaise Naimuddin (2017KUCP1014) – 3.83
 - ✓ Manoj Kumar Bairawa (2017KUCP1044) – 3.17
 - ✓ Manomohan Kumar (2016KUEC2017) – 6.00
 - ✓ Hariom Parmar (2017KUCP1060) – 5.00
 - ✓ Salman Khan (2017KUCP1052) – 3.00
 - ✓ Shivam Gupta (2017KUCP1040) – 3.33
 - ✓ Abhishek Kayath (2017KUCP1041) – 3.17
 - ✓ Apurv Jain (2017KUCP1016) – 5.58
 - ✓ Ankit Kumar Sharma (2017KUEC2007) – 5.63
 - ✓ Vaibhav Kushwaha (2017KUEC2013) – 4.00
 - ✓ Vipasha Chandwani (2016KUCP1011) – 5.67

न्यू इंडिया संकल्प सिद्धि के लिए एकात्म मानववाद का महत्व

- रूपरेखा :- 1) प्रस्तावना 2) न्यू इंडिया संकल्प
 3) एकात्म मानववाद 4) एकात्म मानववाद का महत्व
 5) संकल्पसिद्धि : रुक्ष सफ्ट 6) उपसंहार।

प्रस्तावना :- आज आजादी के सहर साल बाद स्वतन्त्र भारत के अन्दर विभिन्न प्रकार के परिवर्तन हुए। जोकलतालिक शासन के लिए कई सरकारें आईं गयीं। तमाम तत्कालीन विषयों- समस्याओं पर काम किया तथा उन समस्याओं को दूर करने का सम्भवतः प्रयास किया। रुक्ष लम्बी ग्रन्थामी को आजादी के बाद सामान्य जनमानस में रुक्ष नहीं आजाएँ - आकांदारूँ उत्पन्न हुए और फलवरुण विभिन्न अनियमितताओं के बारबद देश में रुक्ष दूरी जोकलतालिक का गठन हुआ। इस प्रकार भारत रुक्ष पुर्ण जोकलतालिक देश कहलाने का अधिकारी हुआ। विभिन्न कल्पनाओं के बाबूद हमारा देश उन विकास के पथ पर अग्रसर हुआ। आज हमारा देश स्वतन्त्रता के साथ देशक बीतने के बाद रुक्ष स्थिति में पहुँच चुका है जहाँ वैशिक सर की बुनियादी ए सुरेधाओं के साथ-साथ आधारभूत संस्कार, बाजार, सूचना प्रौद्योगिकी, तकनीकी कौशल, कम्प्यूटर विज्ञान, कृषि तथा पर्यटन आदि क्षेत्रों की हम रुक्ष बड़े परिवर्तन के रूप में देख रहे हैं।

विकास के पथ पर अग्रसर हो रहा मेरा भारत,
 बौद्ध से लैकर मंगल तक पहुँच गया है मेरा भारत।

न्यू इंडिया संकल्प :-

आशुनिक विचारधाराओं के प्रवर्तक, बृहत् विकास के स्वप्नदृष्टि, हमेरे देश के यशस्वी प्रधानमंत्री 'कीरति नरेन्द्र मोदी' देश को हमारे स्वज्ञों का भारत बनाने के लिए कदम में 9 अगस्त 2017 दिन बुधवार को लोकसभा न्योकर "सुभला महाजन" ने एक संकल्प शपथ पन पढ़ा।

1st Prize:

Manomohan Kumar (2016KUEC2017)

जिसके अनुसार, "आज भारत के होड़ो आनंदोलन के ७५ वर्ष बाद हम शापथ लेते हैं भ्रष्ट को एक शांतिवाली, सम्पन्न, उत्कृष्ट तथा वह भ्रष्ट जो ध्रुष्टाचार से मुक्त हो, एक सुशासन, तकनीकी विज्ञान के द्वारा में असंित रूप सभी के विकास के लिए प्रतिबद्ध भारत का निमणि करेंगे। हम समाजता और राष्ट्रवाद के सिद्धान्तों को समर्पित तथा लोकतन के नव्यों की बचाव ले प्रतिबद्ध होंगे एक ऐसे करोड़ जनता के जनपरिवारों द्वारा हम शापथ लेते हैं कि जनमानस के सहयोग से अपने कल्याणों का निर्वहन कर अगले चाँच सालों में, जब देश अपना ७५ वां रवतन्ती दिवस मना रहा होगा तब हम महात्मा गांधी के सपनों का भारत बनायेंगे।" इस संकल्प की मेहरबानी के लिए हम प्रतिबद्ध होंगे।

जब हम संकल्प की सिद्धि कर पायेंगे, अपने सपनों का भारत बनायेंगे।

रकाम मानववाद:

रकाम मानववाद क्या है? रकाम मानववाद मानव जीवन का सम्पूर्ण सृष्टि के रकमात् सम्बंध का दर्शन अहं है।

जिसके केन्द्र में व्यक्ति, व्यक्ति से जुड़ा परिवार, परिवर्ष से जुड़े समाज, जाति फिर राष्ट्र, विश्व से अनन्त ब्रह्मांड को अपने मे समर्पित किये हैं। जिसमें विकास का सिद्धांत है। एक इसरे से जुड़े हुए विकास दोष ज्ञान है जो एक भृत् प्रक्रिया है। जिसमें हम अपने अस्तित्व को साधते हुए एक दूसरे के सहयोगी हैं।

रकाम मानववाद का रैकानिक विवेचन - 'पछित दीनदयाल उपाध्याय' जी' ने किया था। भास्त के इतिहास, में रकाम मानववाद की परिभाषा जब महत्व को पछित दीनदयाल उपाध्याय जी ने दुनिया को बताया।

1st Prize:

Manomohan Kumar (2016KUEC2017)

रकात्म मानववाद का महत्व :-

जब हम न्यू इंडिया की बात करते हैं, न्यू इंडिया के सपने की पूरा करने की बात हो तो इसकी सिफारिश के लिए देश के प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी ही बाती है कि हम यथासम्भव प्रयास करें तथा इसे सफल बनाने में सहयोग करें। इस तरह 'रकात्म मानववाद' ऐसे सम्बन्ध के धृति का महत्व ग्रेटर बृहत जाता है। जहाँ किसी राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए सर्वभाव व सर्वसम्मान एवं पूर्ण जनमानस का सहयोग अपरिहार्य होता है। यह रक्त रेसी शामिल है जिसमें किसी मतं विशेष या विचार की व्युत्पत्ति नहीं। यह स्वतः ही रक्त विकास का सिद्धान्त है।

जहाँ साध वहाँ विकास,
सबका साध सबका विकास।

संकल्पसिद्धि : एक सपना :-

जिस तरह किसी कार्य को सञ्जलतापूर्वक करने के लिए उसके तत्वों का सहयोग नितान्त है उसी प्रकार किसी राष्ट्र-विशेष के विकास में समूर्ण जनमानस की भागीदारी, राष्ट्रों का राष्ट्रों के प्रति सहयोग की भावना का भी होना आवश्यक है। जब हम न्यू इंडिया के संकल्प सिद्धि की बात करते हैं तो यह और भी आवश्यक ले पाला है। अतः यह आवश्यक है कि हम 'रकात्म मानववाद' के महत्व को समझें तथा नये भास्तु के सपने एक सपना भासा करने से अच्छा जन्मतपुर्व बोधायन है। अगर हम इसा भरने में सफल नहीं होते हैं तो न्यू इंडिया का संकल्पित एक सपना भास रह जायेगी।

ज्ञान के प्रकाश में, सब की राह पर, धर्म की दृष्टि विश्व कर्म-संकल्पने जीवन के संग्राम में, सपनों की राह पर, वृद्धता का दाल विश्व संकल्प को सिद्ध कर।

1st Prize:

Manomohan Kumar (2016KUEC2017)

उपसंहार :-

न्यू इण्डिया के संकल्प मिशन का सपना हम हर भारतवर्षी के ज्वन में चल रही है, हम इक ऐसे ही भारत की कल्पना कर रहे हैं। हम इसे पुरा करने के लिए एक्युट होकर जुटे हुए हैं ताकि हम इस समृद्ध भारत बना सकें। अगर हम जनभागीदारी को इसके महत्व को समझेंगे तो फिर हम आजादी के पिछले साल बाद, सन २०२३ तक इस नये भारत (न्यू इण्डिया) का निर्माण इसके होंगे तथा हम अपने सपने को पूरा कर पायेंगे।

देश में तलालीन विधीयों एवं समरथाओं के बावजूद हमने इक सपना देखा है जब हमें इन समस्याओं से मुक्ति मिल चुकी होगी और हम इस सपने को पूरा करके रहेंगे, ऐसा हमें पूरा विश्वस है पर यह सम्भव लगी है। जब हम 'रुकात्म मानववाद' के महत्व को चरितार्थ कर सकेंगे।

“ सपने अब सपने नहीं हकीकत बनेंगे,
क्योंकि सपना हम सब ने मिलकर देखा है। ”

- जय दिव।

1st Prize:

Manomohan Kumar (2016KUEC2017)

Self Written Poem :- (Instead of Essay)

Electronic Essay Competition on "Importance of Integral Humanism for New India Resolution"

20 km from Mathura in 1916,

A legend was born, with passion and a dream.

No one knew the voice they felt noise,

will one day be Independent Nation's voice.

They must have felt the future's call.

The boy was named "Deendayal"!

Early death of parents must have left him in despair,
But the one born born with "fire and soul" could
thankfully repare.

Grew up as a philosopher, having opinion was the
only choice,

But a step in politics gave his opinion the real
voice.

Convinced by the fact : "a nation can't develop by
leaving its own roots and following western tradition."

A philosophy popped up called "Integral Humanism"!

Integral reflected the union of body, mind and soul;
and Humanism dealt with bringing nation as a whole.

A whole where everyone developed and none left behind
But the need of the hour - 'Western Development
model should not feel kind'.

2nd Prize:

Vipasha Chandwani (2016KUCP1011)

How could we rely on those that system which ruled us for 200 years at ease!

Deendayal felt that a 'roadblock to growth' and Bhart Mata needed a "fresh breeze".

Technology is welcomed but not at the cost of someone's lunch,

Every one should be employed, with no one left feeling the crunch.

"A life of dignity is all we need."

And voila!!! You grabbed the idea of existence of human breed!

Had we followed his Development Model with persistence we surely wouldn't a nation of labour struggling for food even after six decades of independence!

Today from unemployment, poverty, illiteracy to political instability, all we face is a mistake.

But we are here and its never too late to compensate!

Today we called it 'Indian Resolution'.

The name has changed,

but we are at the same state!

2nd Prize:

Vipasha Chandwani (2016KUCP1011)

Panditji's राजनीति, अर्थनीति, समाज-शास्त्र, राष्ट्रनीति
is all we need to follow!

Only if Panditji had lived a little longer,
we would have seen the effectiveness of his
work earlier.

Now it's time to make haste!

All Panditji believed was

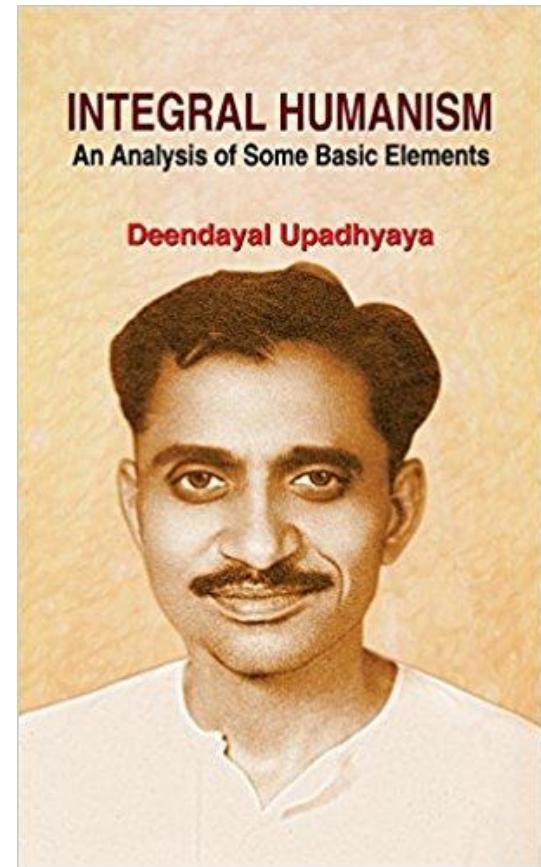
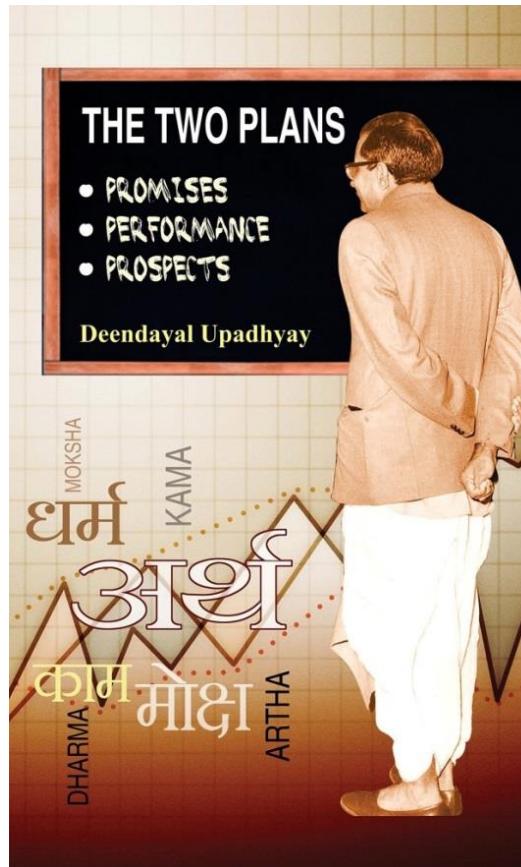
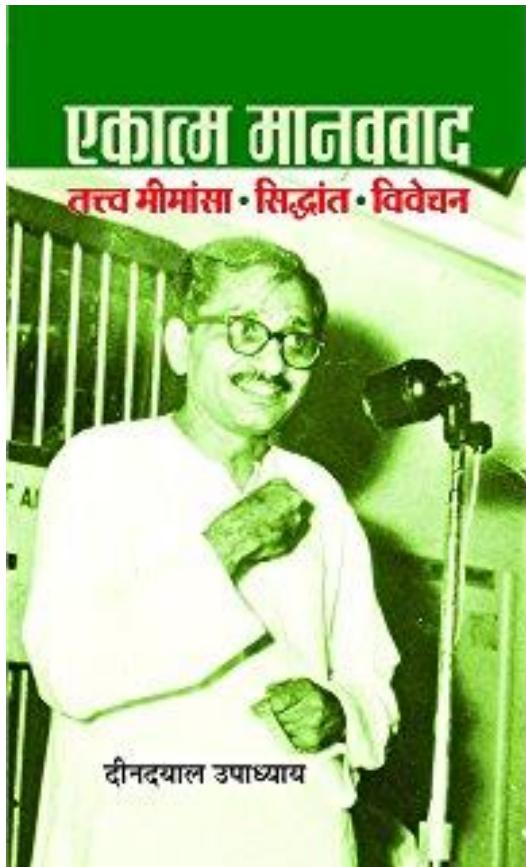
सत्यमेव ज्ञाते !

2nd Prize:

Vipasha Chandwani (2016KUCP1011)

Prizes

- Following books were given as 1st best prize for posters and essays in Hindi or English languages
 - Ekatma Manavvaad (Hindi, Hardcover, Deendayal Upadhyay)
 - The Two Plans (English, Paperback, Deen Dayal Upadhyay)
- Following book were given as 2nd best prize for posters and essays in Hindi or English languages
 - Integral Humanism: An Analysis of Some Basic Elements (English, Paperback, Deen Dayal Upadhyay)



List of Volunteers

- **Anchoring for the event**
 - Deepak Sharma (2016KUCP1030)
- **Rangoli making for the event**
 - Vipasha Chandwani (2016KUCP1011)
 - Deepika Joshi (2017KUEC2013)
 - Nidhi (2016KUEC2019)
 - Tapaswini Pangi (2016KUCP1041)
 - Ayushi Agarwal (2016KUEC2033)
 - Minu Kumari (2016KUEC2024)
 - Roopal Agrawal (2016KUEC2015)

References

- Documentary titled “एकात्म मानववाद एवं अंत्योदय के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जीवन गाथा”
 - <https://www.youtube.com/watch?v=WAOAt0Ds7T8>
- Logo of Pt. Deendayal Upadhyay Ji
 - <http://180.179.170.86/en/download-center/dduquotes>
- Quotes of Pt. Deendayal Upadhyay Ji
 - <http://180.179.170.86/en/download-center/dduquotes>
- Background music during display of logo of Pt. Deendayal Upadhyay Ji
 - <https://www.youtube.com/watch?v=csp-7pKjxoA>
- Background music during display of quotes of Pt. Deendayal Upadhyay Ji
 - <https://www.youtube.com/watch?v=zieAx1JD45I>